डॉ. संजय कुमार
इतिहास विभाग
R.B.G.R. College

प्र० → प्रथम विश्व-युद्ध के बाद इंग्लैण्ड का अमेरिका के संबंध पर प्रकाश डालो।

उत्तर → अमेरिका ने उसी यूरोपीय तथा एशियाई राजनीति में भाग लेना अस्वीकार किया था लेकिन प्रथम विश्व युद्ध चल रहा था इसमें कोई सन्देह नहीं है कि वह युद्ध में भाग लेना नहीं चाहता था, किन्तु जर्मनी द्वारा विवश किए जाने पर उसे युद्ध में भाग लेने के लिए बाध्य होना पड़ा। इसके बाद विश्व राजनीति से अलग रहना नितान्त असंभव था। युद्ध की समाप्ति पर हुई पेरिस वार्ता में अमेरिका के राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने स्वयं भाग लिया था। अमेरिका तथा इंग्लैण्ड ने फ्रांस की सुरक्षा की गारंटी भी दी थी, किन्तु अमेरिका के सीनेट द्वारा पेरिस की समस्त संधियों को अस्वीकार कर दिए जाने से यह धारा लागू नहीं हो सकी। इंग्लैण्ड इस संधि में अमेरिका का सहयोगी था, किन्तु अमेरिका के द्वारा अस्वीकार किए जाने पर इंग्लैण्ड ने भी इस संधि की शर्तों को मानने से इंकार कर दिया था। इंग्लैण्ड की नकल में नीति भी अमेरिका की नीति से प्रभावित थी। इंग्लैण्ड जर्मनी से क्षतिपूर्ति की राशि बलपूर्वक वसूल करना नहीं चाहता था परन्तु फिर वह इतना आग्रह चाहता था कि अमेरिका यदि स्वयं भाग न ले तब ही उसके लिए ऐसा करना संभव था। संभवतः इसी कारण इंग्लैण्ड ने जर्मनी के अधिकृत प्रदेश राइन्स पर अधिकार बनाए रखा था।

अमेरिका यूरोपीय राजनीति से सदैव को अलग रखना चाहता था, किन्तु फिर भी जापान की लगातार बढ़ती हुई शक्ति से वह भयभीत था अतः सुदूरपूर्व की समस्याओं में इंग्लैण्ड का साथ देने को उत्सुक था। इस क्षेत्र में दोनों देशों के पारस्परिक सहयोग करने में एक विशेष समस्या यह थी कि इंग्लैण्ड और जापान के मध्य एक संधि पहले ही चल रही थी। इंग्लैण्ड इस संधि की अवधि की समाप्ति के बाद अमेरिका को भी इसमें शामिल करने के लिए तैयार था। इसी उद्देश्य से वाशिंगटन में 12 नवम्बर 1921 ई० को एक सम्मेलन शुरू हुआ जो 6 फरवरी 1922 ई० तक चलता रहा जिसके अन्तर्गत अनेक संधियाँ हुई।

समाप्त